

SHRI BANGARU ADIGALAR

Shri Bangaru Adigalar is widely respected across the globe for his service to humanity and charity. He is fondly called as AMMA by his devotees for the motherly love and care shown to them.

2. Born on March 17, 1941, Shri Adigalar finished his school education in 1960 and underwent training in Chengalpattu Teachers Training School (1963 — 1965). After completing his teachers training course, he worked as a teacher for twenty years. Shri Adigalar is the Founder of Adhiparasakthi Spiritual Movement. Adhiparasakthi Siddhar Peedam, Melmartnuthur is an abode of 21 Siddhas who had attained jeeva samadhi in this soil. The uniqueness of this Peedam is that even women are permitted to enter sanctum-Sanctorum to offer prayers. Melmaruvathur once a tiny village is now a spiritual landmark on the world map.

3. Shri Adigalar, by his oracles and directions, has given the charitable and service activities of the Peedam to grow by manifolds. There are thousands of Volunteer Service Groups across the globe to propagate his vision and mission. All of them have social service programme as part of their regular activities including rehabilitation work to people affected by natural calamities.

4. The trust established by Shri Adigalar runs several Educational and Medical institutions and other services for the betterment of the common people. The latest addition is the creation of one thousand bedded Multi Speciality Hospital, the newest in a series of medical services that began in 1985. He has been conducting outreach Medical camps periodically at various places. With the object of promoting spiritual awareness and awakening, he held spiritual conferences to develop oneness amongst the people.

पद्म श्री

श्री बंगारू अड़िगलार



श्री बंगारू अड़िगलार का मानवता के प्रति उनकी सेवा और दयालुता के लिए विश्व भर में आदर किया जाता है। आपके भक्त आपसे प्राप्त मातृवत स्नेह और वात्सल्य के कारण आपको प्यार से अम्मा कहकर बुलाते हैं।

2. आपका जन्म 17 मार्च, 1941 में हुआ था। आपने वर्ष 1960 में अपनी विद्यालयी शिक्षा पूरी की और चेंगलपट्टु टीचर्स ट्रेनिंग स्कूल से प्रशिक्षण (1963-65) प्राप्त किया। अपना शिक्षक प्रशिक्षण पाठ्यक्रम पूरा करने के पश्चात्, आपने बीस वर्षों तक एक अध्यापक के रूप में कार्य किया। श्री अड़िगलार आदिपराशक्ति आध्यात्मिक आंदोलन के प्रणेता हैं। आदिपराशक्ति सिद्ध पीठम, मेलमार्तनुथुर इस भूमि में जीव समाधि प्राप्त करने वाले 21 सिद्धों का पवित्र स्थान है। इस पीठम की अनूठी बात यह है कि यहां महिलाओं को भी पूजा करने हेतु इसके गर्भगृह में प्रवेश करने की अनुमति है। मेलमरूवथुर जो कभी एक छोटा सा गांव था, अब विश्व के नक्शे पर एक आध्यामिक केन्द्र के रूप में स्थापित हो चुका है।

3. आपने अपनी दिव्यवाणी और निर्देशनों के द्वारा पीठम की धर्मार्थ एवं सेवार्थ गतिविधियों को कई गुणा उन्नति प्रदान की है। आपके विज़न और मिशन का पूरे विश्व में प्रचार-प्रसार करने के कार्य में हजारों स्वयंसेवक सेवा समूह जुटे हुए हैं। इन सभी स्वयंसेवकों ने प्राकृतिक आपदाओं से प्रभावित लोगों के पुनर्वास कार्य सहित सामाजिक सेवा के कार्यक्रमों को अपनी नियमित गतिविधियों का हिस्सा बनाया है।

4. श्री अड़िगलार द्वारा अधिष्ठापित ट्रस्ट जन-साधारण के कल्याण के लिए अनेक शैक्षिक और चिकित्सा संस्थानों का संचालन किया जा रहा है तथा अन्य प्रकार की सेवाएं भी प्रदान की जा रही है। इस श्रृंखला में, हाल ही में 1000 बिस्तरों वाला बहु विशेषज्ञता युक्त अस्पताल का निर्माण भी शामिल है। यह अस्पताल वर्ष 1985 में शुरू हुई चिकित्सकीय सेवाओं की श्रृंखला की नवीनत्तम कड़ी है। आप विभिन्न स्थानों पर आवधिक रूप से सेवारत संस्था सहायता वाले चिकित्सा शिविर आयोजित करते रहे हैं। आपने आध्यामिक बोध और जागृति को प्रोत्साहन देने के उद्देश्य से, आपने लोगों में एकाग्रता और अपनेपन का भाव विकसित करने के लिए आध्यात्मिक सम्मेलन आयोजित किए।